अध्याय-3

वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 व्यक्तित्व

3.1.1 जन्म

3.1.2 परिवार

3.1.3 बचपन

3.1.4 शिक्षा

3.1.5 साहित्य प्रेमी

3.1.6 कुश्ती एवं व्यायाम प्रेमी

3.1.7 यात्रा एवं शिकार प्रेमी

3.1.8 संगीत एवं कला प्रेमी

3.1.9 साहित्य सृजन की प्रेरणा

3.2 कृतित्वः

3.2.1 उपन्यास

3.2.2 नाटक

3.2.3 कहानियाँ

3.2.4 एकांकी

3.2.5 आत्मकथा

3.2.6 स्फुट (लोकगीत)

3.2.7 गद्य-काव्य

3.2.8 अप्रकाशित रचनाएँ

3.2.9 पुरस्कार

अध्याय-3

वृन्दावनलाल वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 व्यक्तित्व

"मैं तथ्य का उपासक हूँ । तथ्य को सृजनात्मक ढंग से प्रस्तुत करना मैं सत्य की पूजा और कला का प्राण समझता हूँ । यदि यह प्रस्तुतीकरण निरुद्देश्य है या 'कला के लिए कला' आदर्श है – तो व्यर्थ है । केवल मनोरंजन या मनोविश्लेषण लेखक का सामाजिक कर्तव्य नहीं है । सामाजिक कर्तव्य की सीमा दिखलाई नहीं पड़ती, परंतु अपनी-अपनी परिधि की स्थापना तो की ही जा सकती है।"[1]

- वृन्दावनलाल वर्मा

मानव कृत सभी कलाओं एवं कलाकारों की अपनी-अपनी सीमाएँ होती हैं और अपने-अपने ढंग से सभी मानव-समाज का विश्वसनीय चित्र उभारते हैं, पर इतिहासकार से ऐतिहासिक उपन्यासकार की शक्ति और सीमा अपेक्षाकृत महान है । वर्माजी ने ऐतिहासिक सामग्रियों का उपयोग अपेक्षाकृत मानवीय कोमल प्रवृत्तियों के सफल अंकन के लिए ही किया है । इन्होंने इतिहास की उन्हीं सामग्रियों को ग्रहण किया, जिनके चयन से उपन्यास की मनोरंजकता तो बनी ही रही, साथ-साथ जीवन के विविध पक्षों का पारस्परिक संघर्ष और उनमें उदात्त

वृत्तियों की विजय भी अंकित होती चली गई । न तो वे इतिहास को आँख मूँदकर लेते हैं और न परंपराओं को । कल्पना का उपयोग वे करते हैं, पर उतना ही 'जितना साग में नमक', परन्तु उतने से ही उपन्यास में सरसता आ जाती है ।

3.1.1 जन्म

श्री वृन्दावनलाल वर्मा हिंदी के एक ऐसे उपन्यासकार है, जिन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यास लेखन का प्रारंभ किया । उपन्यास-सम्राट श्री वृन्दावनलाल वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी ज़िले में मऊरानीपुर गाँव में 9 जनवरी सन् 1889 को मध्यवर्गीय कायस्थ कुल में हुआ था ।

3.1.2 परिवार

वर्माजी के पिता का नाम श्री अयोध्याप्रसाद और माता का नाम श्रीमती सबरानी था । पिता झाँसी के तहसीलदार के दफ्तर में रजिस्ट्रार काननूगो थे । माता वैष्णवी थीं और पुत्र को वे पिता से कहीं अधिक प्यार करती थीं । उन्हीं की वात्सल्य और ममतामयी गोद में वर्माजी का जीवन बीता । इनके परदादा का नाम दीवान आनन्दराय था, जो रानी लक्ष्मीबाई की ओर से लड़ते-लड़ते सन् 1858 में मऊ की लड़ाई में मारे गये थे । वर्माजी को अपनी परदादी का भी अपार प्यार मिला था । वे आठ वर्ष के थे तब उनकी परदादी का देहान्त हो

गया । उनको प्यार करनेवाले तीसरे व्यक्ति उनके चाचा श्री बिहारीलाल थे, जो ललितपुर में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के अहलमद थे एवं साहित्यिक व्यक्ति थे ।

3.1.3 बचपन

वर्माजी को बचपन में परिवार की तरफ से अपार स्नेह मिला । माता के तो ये दुलारे थे । बचपन में वे (वर्माजी) नित्य 'हनुमान चालीसा' पाठ किया करते थे । पढ़ने-लिखने का शौक इन्हें बेहद था । बचपन में इनकी परदादी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की कहानी एवं किस्से सुनाया करती थीं, अधिकांश किस्से सत्य होते थे, शिशु के मन में कौतूहल जगा जाते थे । माता की वैष्णव भावना यदि रामायण की कथा भागवत आदि के अनुशीलन के रूप में व्यक्त होती थी, तो चाचा की साहित्य-सृजन में प्रकट होती थी । ऐसे साहित्यिक और वैष्णव परिवार में एवं माता के वात्सल्य और ममतामयी गोद में वर्माजी का बचपन बीता ।

3.1.4 शिक्षा

वर्माजी जब चार वर्ष के थे तब स्वर्गीय पंडित विद्याधर दीक्षित से उनका अक्षरारम्भ हुआ और सात वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया । मैकडोनल हाईस्कूल झाँसी में उनकी शिक्षा हुई, जहाँ उन्होंने मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास किया और स्कूल में भी प्रथम रहे । आर्थिक संकट को समझकर वर्माजी सरकारी नौकरी करने लगे । परंतु वहाँ के कुंठित वातावरण से क्षुब्ध हो

कुछ ही महीनों में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया । पुनः ग्वालियर से इन्होंने बी.ए. पास कर, सन् 1913 में आगरा के कॉलेज में एल.एल.बी. और एम.ए. में दाखिला कराया और अपनी पढ़ाई जारी रखी । परिश्रमी छात्रों की भाँति आगरा में ट्यूशन करके अपना खर्च निकालते थे । मुफीद आम हाईस्कूल में तीन रूपए मासिक की नौकरी भी तीन सप्ताह तक की । एल.एल.बी. में वे एक साल फेल भी हुए । परंतु माँ ने उन्हें ढाँढ़स बँधाया । ये फिर कमर कसकर पढ़ाई के लिए तैयार हो गए । सन् 1914 में माँ के स्वर्गवास होने पर केवल एल.एल.बी. की ही परीक्षा उत्तीर्ण की । सन् 1916 में वकालत आरंभ की, लेकिन कुछ खास पैसे नहीं मिले । हारकर काशी के श्री गौरीशंकर प्रसाद की कृपा से नेपाल के राजगुरु को हिंदी पढ़ाने के लिए जाने का निश्चय किया, लेकिन पिता ने नहीं जाने दिया । मार्च 1917 से वकालत चली तो ऐसी चली कि दूसरों को मुकदमे देने पड़े । कभी जब कचहरी से समय मिलता तब क्लब की लायब्रेरी में चले जाते और बेल्जियम के कवि और नाटककार मेटरलिंक, अनातोले फ्रांस, मोपासा, ताल्स्ताय और पुश्किन की कृतियों में रम जाते । इमर्सन तो उनका अत्यन्त प्रिय लेखक हो ही चुका था ।

3.1.5 साहित्य प्रेमी

श्री वृन्दावनलाल वर्मा मुख्यतः ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणेता हैं । उन्होंने हिंदी साहित्य के उपन्यास को एक नयी दिशा प्रदान की । वर्माजी सरल,

संयमी एवं विनम्र स्वभाव वाले लेखक हैं । वे जैसे जो कुछ हैं, अत्यंत सहज और स्पष्ट हैं । वे अन्याय के साथ समझौता न करनेवाले व्यक्ति हैं । पढ़ने-लिखने का शौक वर्माजी को बचपन से ही है। सात वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया था । जब वर्माजी के हाथ उनके चाचा के पास आया बँगाल का हिंदी अनुवाद नाटक 'अश्रुमति' आया तो उसमें कुछ गलत लिखा हुआ था । वर्माजी को यह बहुत खटका और उनके मन में पुस्तकों में लिखी झूठी बातों के प्रति घृणा का बीज तभी से जमा और वर्माजी ने सच्ची बातें लिखने का निश्चय किया । चाचा ने बताया कि अगर सच्ची बातें लिखनी हो तो खूब पढ़ना पड़ेगा । फलतः वर्मा जी तभी से पढ़ने में डूब गए ।

साहित्य पढ़ने का शौक ऐसा जागा कि बारह वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने 'चन्द्रकान्ता सन्तति' पढ़ डाली थी । जो उनके चाचा ने खुद के पढ़ने के लिए मँगवाई थी । वर्माजी रात को चुपचाप उठकर एक कोठरी में साहित्य पढ़ा करते थे । इस विषय में उन्होंने स्वयं लिखा है –

''मेरा ध्यान इस उपन्यास और उन नाटकों की ओर गया । लालटेन घर में केवल एक थी । टीन के लम्प दो । लालटेन सोने के समय बुझा दी जाती थी । टिन का एक लम्प जलता रहता था । जब सब सो जाते थे, तब मैं चुपचाप उठकर, एक कोठरी में उस लम्प के सहारे इन पुस्तकों को पढ़ा करता था । दिन में स्कूल और खेल में अवकाश नहीं मिलता था - पाठ्यपुस्तक के भी

पढ़नी पढ़ती थी । इसलिए रात में वह लम्प, कोठरी, मैं और वे नाटक उपन्यास ।''[2]

उन दिनों वे पाँचवें दर्जे में थे । पन्द्रह-सोलह वर्ष की अवस्था तक आते-आते उन्होंने 'गुली वर्ष ट्रेवल' और 'रोविन्सन कूसो' नामक दो पुस्तकें, जार्ज विलियम रेनाल्ड्स कृत 'सोल्जर्स वाइफ' एवं शेक्सपियर की 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस', 'टेम्पेस्ट', 'हैमलेट', 'मैकबेथ' और 'ऑथोलो' आदि कृतियों को कसकर पढ़ लिया था ।

मैट्रिक के बाद इनको मुहर्रिरी करनी पड़ी । उसमें कुछ रिश्वत का काम था, जो इन्हें पसन्द नहीं आया । इसे छोड़कर वे जंगल विभाग में नौकरी करने लगे । पढ़ने का शौक तो था ही । एक दिन पढ़ रहे थे कि - ''ऑफिस के एक बाबू ने उनसे कहा कि यह दफ्तर है, यहाँ दफ्तर का ही काम होना चाहिए।''[3] उन्होंने तो प्यार से कहा था, पर वर्माजी ने जितने दिन पढ़ा था उतने दिन खड़े रहकर दफ्तर की मेज पर काम किया और इस प्रकार कर्तव्य विस्मरण का प्रायश्चित किया ।

3.1.6 कुश्ती एवं व्यायाम प्रेमी

वर्माजी केवल मन को ही पुस्तकों के अध्ययन से विकसित करना नहीं चाहते थे, शरीर को भी सुपुष्ट बनाने की ओर उनका ध्यान था । वे कुश्ती और व्यायाम के प्रेमी थे । झाँसी में तो अखाड़ा उनके दैनिक जीवन का एक प्रमुख

अंग था । इतना व्यायाम करते थे कि इन्हें जाड़ों में भी ऊनी कपड़ों की जरूरत नहीं पड़ती थी । सूर्योदय से पहले अखाड़े में जम जाते। पाँच-सात सौ दंड और दो-ढ़ाई सौ बैठकें निकालते थे । सौ-सवा सौ बाल्टी अपने हाथ से खींचकर नहाते । खाने में भी वह माहिर थे, इस विषय में पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश' जी ने लिखा है कि - ''अधिक से अधिक सवा सौ संतरे और ढाई सौ आम वे एक बार में खा चुके हैं । एक बार देवगढ़ की यात्रा की तो साढ़े पाँच सेर दूध और पाव-डेढ़ पाव जलेबियाँ खा गए थे, जिसके लिए मंदिर के मुनीम ने रसीद ले ली थी, इसीलिए कि अधिकारी इस बात पर विश्वास ही नहीं करते थे ।''[4] वे सत्तर साल की उम्र में भी बराबर कसरत करते थे और उनमें अपार बल था ।

3.1.7 यात्रा एवं शिकार प्रेमी

कसरत के अतिरिक्त उनका दूसरा शौक था घुमक्कड़ी और शिकार । बुन्देलखण्ड के पहाड़ों, नदियों, नालों, जंगलों का चप्पा-चप्पा उन्होंने छाना था । प्रकृति के प्रति वर्माजी का अभूतपूर्व लगाव है । बुन्देलखण्ड की भूमि, उसके नदी-नाले, पर्वत-पहाड़, पेड़-पौधे और ऋतु के अनुकूल दिन-रात के अनेक समयों का जैसा सूक्ष्म ज्ञान वर्मजी को है उतना कम लोगों को होगा । वर्माजी ने स्वयं भी लिखा है-

"मैं डांगों, पहाड़ों और नदियों में इतना घूमा हूँ कि घटनाएँ कभी भूल नहीं सकता हूँ । अनेक घटनाओं की तो मुझको तारीखें तक याद हैं... शिकार कोई

खेले या न खेले, परंतु मैं अनुरोध करूँगा कि जंगलों और पहाड़ों में घूमे जरूर । घूमें ही नहीं, भटके और दो-चार बार अपने घुटने भी फोड़े..... ।"[5] कचहरी का काम खत्म होते ही वे शनिवार को कंधे पर बंदूक बाँध कर साईकिल पर अट्ठारह-बीस मील दूर जंगल में शिकार खेलने निकल जाते । रात-रात भर गुजार देते निस्तब्ध, नीरव, निर्जन वनों में । उनके पिता के मुन्शी नवाब अली के पास टोपीदार बंदूक का लाइसेंस था, जिससे उन्होंने बन्दूक चलाना सीखा सन् 1910 में ।

3.1.8 संगीत एवं कला प्रेमी

वर्माजी ललित कलाओं के ज्ञाता थे । संगीत, चित्र, नृत्यकला और पुरातत्त्व उनके प्रिय विषय थे । संगीत को वे विशेष महत्त्व देते थे । उनका कहना है – "गीत जीवन का रस है । एक मात्र हिंदू ही संसार में ऐसा है, जिसने इसका पूरा-पूरा आनंद उठाया है। मृत्यु का रूप हिंदू शास्त्रों में बारह वर्ष की कन्या जैसा माना गया है । हमारा प्रिय देवता श्री कृष्ण नट नागर है जो बाँसुरी बजा रहा है ।"[6] वर्माजी सितार भी बजाते थे । लेखक सियारामशरण प्रसादजी ने लिखा है – "..... वर्माजी के पुत्र श्री सत्यदेव वर्मा ने मुझे स्वयं बतलाया कि पिता जी सितार बजाने में अत्यंत पटु है और घंटों सितार बजाया करते हैं और कभी-कभी संगीत के मोहक, मादक प्रभाव में इतने खो जाते हैं कि खाना भी भूल जाते हैं और इस दशा में कई बार उनकी ट्रेन छूट गई है।....."[7] झाँसी

वकालत करते थे तो वे नित्य उस्ताद आदिल खाँ को लेकर सितार बजाया करते थे । शनिवार और रविवार को शिकार और शेष पाँच दिन सितार । हम उनकी इस संगीतकला के ज्ञान का उपयोग कई पुस्तकों में देखते हैं । उदाहरणार्थ 'मृगनयनी' का बैजनाथ गायक और संगीतज्ञ है, 'माधवजी सिंधिया' में गन्ना बेगम सितार में दक्ष है । ऐसे एकमात्र पहलवान, शिकारी, संगीतप्रेमी, हरफनमौला लेखक थे वृन्दावनलाल वर्मा ।

इस प्रकार बौद्धिक, शारीरिक और कलात्मक दृष्टि से वर्माजी में सभी का अद्भुत समन्वय है । उनके निकटवर्ती व्यक्ति निश्चित रूप से जानते हैं, वर्माजी कठिन से कठिन परिस्थिति में भी विचलित नहीं होते और अटूट आस्था और विश्वास से श्रमशील बने रहते थे । उनकी दृढ़ता और धैर्य की सीमा तो उस समय देखने को मिली जब उनके पुत्र सत्यदेव वर्मा प्ल्यूरिसी और मोतीझरा से पीड़ित थे । उसके भविष्य की चिंता में वे अपनी कमाई के पचास-साठ हजार रूपए और उसमें साठ हजार और कर्जा लेकर एक फार्म बनाने में जुट गये । इस सारे कार्य में 10-12 वर्ष नष्ट हो गये । रूपया भी बरबाद हो गया आखिर सत्यदेव वर्मा ने उस फार्म को 30 हजार रूपयों में बेचकर 'मयूरप्रेस' और 'मयूर प्रकाशन' शुरू कर दिया । धीरे-धीरे वृन्दावनलाल वर्मा बेटे के परिश्रम से कर्जे से मुक्त हुए । सन् 1940 में टीकमगढ़ नरेश ने उन्हें कुडारगढ़ के पास भूमि दे दी। वहाँ वर्माजी ने एक गाँव बसा लिया। सन् 1942

से 1955 तेरह बरस, प्रतिदिन चौदह-चौदह घंटे लिखकर वर्माजी ने अनेक उपन्यास और नाटक लिखे।

वर्माजी स्वभाव से सरल एवं विनम्र, बहुत परिश्रमशील, विनयी, परन्तु दृढ़ चरित्र के आत्मसम्मान वाले व्यक्ति थे । अत्यंत नियमित जीवन बिताते थे । निम्न वर्ग के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी । अपने घर के नौकरों तक की प्रशंसा करते वे नहीं अघाते । वर्माजी पर परिवेश, आवेष्ठन, संस्कार, अध्ययन आदि का गहरा प्रभाव था और जीवन और साहित्य में यह ईमानदारी वर्माजी की विशेषता थी । वकालत उनका पेशा था, परंतु अन्याय से समझौता करना उनके स्वभाव में नहीं था । इस कारण से उन्हें जीवन में बहुत सहना पड़ा । किन्तु प्रामाणिकता, सिद्धांत के प्रति प्रेम, लेखन के प्रति एकनिष्ठता उन्होंने कभी नहीं छोड़ी । नये और पुराने विचारों के समन्वय में वे विश्वास करते थे । वे सभी से आवश्यक एवं जीव-पोषक तत्वों को ग्रहण करने के आग्रही थे, तभी तो कभी-कभी यात्रा में छींक से भी डर जाते थे । 80 वर्ष की आयु में वर्माजी ने स्वयं प्राणों की बाजी लगाकर 1947 में झाँसी में दंगा होने से बचाया ।

3.1.9 साहित्य सृजन की प्रेरणा

अब उनकी साहित्य-सृजन की प्रवृत्ति पर विचार करें तो परिवार में साहित्यिक वातावरण तो था ही । उनके चाचा-अच्छे कवि और लेखक थे । उनसे भी उन्हें साहित्यिक बनने की प्रेरणा मिली । उन्होंने 'राम निवास' नामक

अधूरा नाटक लिख छोड़ा था । पन्द्रह वर्ष की उम्र में इन्होंने 'नारातंग बंध' एवं 'सेनापति ऊदल' नामक नाटक के छपते ही वह सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया । इसके अनंतर ये कहानियाँ लिखने लगे जो सरस्वती में छपीं । सन् 1908 में वर्माजी ने 'महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्र' लिखा । लेकिन 16 अप्रैल सन् 1927 का दिन वर्माजी के साहित्यिक जीवन का मंगलप्रभात माना जाता है। उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'गढ़ कुंडार' लिखा । हुआ ऐसा कि –

"शिकार के लिए वर्माजी जंगल में एक गड्ढे में अपने मित्र दुर्जन कुम्हार और करामत खाँ के साथ बैठे हुए थे । सोचा था कि रात को साँभर या सुअर आयेंगे तो निशानेबाजी का मजा ले लेंगे, परंतु वर्माजी ने ऊपर दृष्टि की तो कुंडार का किला दिखाई दिया । देखते ही देखते सवेरे के चार बज गये। दिन निकला तो सुअर के पैरों के निशान दिखाई दिये । पर जो कुंडार किले के साथ एकाकार हो गया हो वह सुअर पर क्या निशाना लगाता ? 'आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' के अनुसार शिकार की जगह कुंडार के किले पर लिखने का निश्चय किया ।"[8]

18 जून को गड्ढे में पहुँचे, जहाँ लिखने की प्रेरणा मिली थी । फूल लाये गये, पुस्तक पर फूल चढ़ाकर मरते दम तक लिखने की प्रतिज्ञा की । स्वयं वर्मा जी ने लिखा है –

"छिपाऊँगा नहीं कि मैं एक रूमाल में बाँधकर थोड़े से फूल भी ले गया था । मैंने अपने इष्ट को वे फूल चढ़ाये और नतमस्तक होकर धन्यवाद दिया। प्रार्थना की कि मरते दम तक लिखता रहूँ ।"[9]

"गढ़ कुंडार' उपन्यास को देखकर गणेश शंकर विद्यार्थी ने उनको हिंदी के वाल्टर स्कॉट की उपाधि दी ।"[10] इसके बाद वर्माजी ने 'लगन', 'संगम' और 'प्रत्यागत' उपन्यास तभी लिखे । वे जंगल में टार्च की रोशनी में उपन्यास लिखते थे । कुंडार से लौटने के बाद उन्होंने अनेक उपन्यासों की रचना की और साहित्यिक जगत में उनका स्वागत हुआ ।

3.2 कृतित्व

वृन्दावनलाल वर्मा हिंदी के एक ऐसे उपन्यासकार है जिन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यास लेखन प्रारंभ किया और निरंतर लिखते रहे । इन्होंने ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग अपेक्षाकृत मानवीय कोमल वृत्तियों के अंकन के लिए किया है । ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना ही इनका साधना क्षेत्र है । वर्माजी की रचनाएँ साहित्य की अनेक विधाओं में हैं । उपन्यास, नाटक, कहानी आदि प्रायः गद्य की कई विधाओं में इन्होंने लिखा है । वर्माजी की रचनाओँ के नाम निम्नलिखित हैं ।

1 उपन्यासः

- **ऐतिहासिक उपन्यास**

1.	गढ़कुंडार	1928
2.	विराटा की पद्मिनी	1929-30
3.	मुसाहिबजू	1943
4.	झाँसी की रानी	1946
5.	कचनार	1947
6.	माधवजी सिंधिया	1949
7.	टूटे काँटे	1949
8.	मृगनयनी	1950
9.	भुवन विक्रम	1954
10.	अहल्याबाई	1955
11.	रामगढ़ की रानी	1961
12 .	महारानी दुर्गावती	1961

- **सामाजिक उपन्यास**

1.	लगन	1927

2.	संगम	1927
3.	प्रत्यागत	1927
4.	कुण्डली चक्र	1928
5.	प्रेम की भेंट	1928
6.	कभी-न-कभी	1942
7.	अचल मेरा कोई	1947
8.	सोना	1950
9.	अमरबेल	1952

2 नाटकः

- **ऐतिहासिक नाटक**

1.	झाँसी की रानी	1947
2.	हंस मयूर	1950
3.	पूर्व की ओर	1951
4.	फूलों की बोली	1951

5. जहाँदार शाह 1953

6. बीरबल 1953

7. ललित विक्रम 1955

- **सामाजिक नाटक**

1. धीरे-धीरे 1937

2. राखी की लाज 1947

3. बाँस की फाँस 1950

4. पीले हाथ 1950

5. सगुन 1950

6. नीलकंठ 1951

7. केवट 1951

8. मंगल सूत्र 1952

9. खिलौने की खोज 1952

10. निस्तार 1956

11. देखा देखी 1956

3 **कहानियाँ**

1. कलाकार का दण्ड 1943

2. शरणागत 1956

3. तोषी 1950

4. अंबरपुर के अमरवीर 1957

5. ऐतिहासिक कहानियाँ 1957

6. मेंढकी की ब्याह 1957

7. अंगूठी का दान 1957

4 **एकांकी**

1. कश्मीर का कांटा 1947

2. कनेर 1951

3. लो भाई, पंचो! लो ! 1947

5 आत्मकथा

1. अपनी कहानी 1961

2. दबे पाँव 1946

6 **स्फुट (लोकगीत)**

1. बुन्देलखण्ड के लोकगीत 1957

7 **गद्य-काव्य**

1. हृदय की हिलोर 1920-26

8 **अप्रकाशित रचनाएँ**

1. आहत (सामाजिक उपन्यास)

2. उदयकिरण (सामाजिक उपन्यास)

3. अमर ज्योति (उपन्यास)

4. ललितादित्य (ऐतिहासिक उपन्यास)

5. कब तक (उपन्यास)

6. अब क्या हो ? (ऐतिहासिक उपन्यास)

7. शबनम (उपन्यास)

8. कीचड़ और कमल (उपन्यास)

9. भारत यह है (रिपोर्ताज)

- **वर्माजी की मौलिक रचनाओं का संक्षिप्त में परिचय**

3.2.1 उपन्यास

श्री वृन्दावनलाल वर्मा का वास्तविक क्षेत्र उपन्यास है । उन्होंने दो प्रकार के उपन्यास लिखे हैं – प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास और दूसरा सामाजिक । सर्वप्रथम हम इनके ऐतिहासिक उपन्यासों का संक्षिप्त में परिचय करेंगे ।

- **ऐतिहासिक उपन्यास**

1 गढ़ कुंडार

यह वर्माजी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है । इस उपन्यास में लेखक ने खगारों के पतन और बुन्देलों के राज्याधिकार का चित्र खींचा है । वर्माजी का पहला उपन्यास होने के कारण उन्होंने बुन्देल खण्ड के वीर बुन्देलों के राज्य की स्थापना का चित्र दिया है । उपन्यास में तीन प्रेम-कथाएँ हैं – (क) हेमवती और नागदेव, (ख) मानवती और अग्निदत्त तथा (ग) तारा और दिवाकर । इस पूरे उपन्यास में ऊँच-नीच की भावना पूरी तरह छायी हुई है । इसी आपसी कूट के कारण उनका पतन होता है । इसमें भारतीय संस्कृति की आस्थाओं और अंधविश्वासों का वर्णन भी मिलता है । डॉ. शशिभूषण सिंघल के अनुसार - “

'गढ़ कुंडार' वर्माजी का ही प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास नहीं, वरन ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा में भी 'प्रथम विधिवत' ऐतिहासिक उपन्यास है ।''[11]

2 विराटा की पद्मिनी

यह उपन्यास भी बुन्देलखण्ड से है । यह वर्माजी का दूसरा उपन्यास है, जो वर्माजी को बेहद पसंद है । इसमें भी 'गढ़ कुंडार' की भाँति तीन युग्म प्रेम कथाएँ हैं – कुंजरसिंह – कुमुद, देवीसिंह – गोमती और रामदयाल – गोमती की प्रेम-कथाएँ । ये प्रणय-कथाएँ ऐकांतिक और अपेक्षाकृत अधिक प्रच्छन्न हैं । 'विराटा की पद्मिनी' में 'कुमुद' इसके कथानक का आकर्षण केन्द्र है । उपन्यास की संपूर्ण कथा इसके चरित्र के चतुर्दिक घूमती है । मुस्लिम शासन वासनावृत्ति, परस्पर टकराव आदि का सुंदर वर्णन मिलता है।

3 मुसाहिबजू

'मुसाहिब जू' बुन्देलखण्ड के जर्जर और संतप्त सामंती युग की एक जनश्रुति पर आधारित घटना से संवलित लघु ऐतिहासिक उपन्यास है, इसके कथानक में एक ही कथा है, जो मुसाहिब दलीपसिंह से संबद्ध है । उनके चरित्र के चतुर्दिक ही कथा आवृत्त रहती है । उसमें एक ध्येयोन्मुखता और एकतानता है । ऊँच-नीच के पारस्परिक भेदभाव को मिटाकर दलीपसिंह अपने सेवकों और

सैनिकों के प्रति सद्भाव सहिष्णुता, उदारता इत्यादि गुणों को प्रदर्शित करते हैं । कथा संघटना में कहीं जटिलता नहीं है । वह सहज भाव से विकसित हुई है ।

4 झाँसी की रानी

यह वर्माजी का शुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है । इस से वर्माजी को अप्रतिम सफलता हासिल हुई है । इसमें रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और स्वराज्य की भावना का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है । इसमें कथा दो प्रवाहों में चलती है, पूर्वार्द्ध में रानी के बचपन और विवाह तक के ऐतिहासिक विवरणों को बड़े धैर्य के साथ प्रस्तुत किया है। उत्तरार्द्ध में युद्ध की तैयारी की बात है । उसका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को अपने देश में नहीं रहने देना और स्वराज्य को बनाये रखना । इसके लिए उसने अपने जीवन को शुचिता के तेज से तपाकर वीरता की देवी पर न्यौछावर कर दिया ।

5 कचनार

वर्माजी द्वारा रचित यह एक नायिका प्रधान उपन्यास है । कचनार एक सुंदर फूल का नाम है । कचनार इस उपन्यास की नायिका है, जिसके इर्द-गिर्द संपूर्ण कथानक का गुंफन हुआ है । इस उपन्यास के पीछे वर्माजी का उद्देश्य नारी के पवित्र एवं सफल चरित्र को अंकित करना रहा, जिसमें वे अंततः सफल हुए हैं । इस सफलता का प्रमुख कारण घटनाओं, परिस्थितियों की समतुल्य योजना है ।

6 माधवजी सिंधिया

सर्वाधिक ऐतिहासिक तथ्यों से आवृत्त 'माधवजी सिंधिया' एक महाकाय ऐतिहासिक उपन्यास है । अठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक परिस्थितियों में पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की उन्मेषशाली शक्ति, पारस्परिक रागद्वेष और ईर्ष्या से ग्रस्त मराठे, राजपूत, जाट और सिखों की दयनीय स्थिति, क्रूर धर्मी नृशंस आदि का कथाओं से उपन्यास आयात है । इस उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यों और तिथियों का जितना संकलन और संयोजन है, उतना वर्माजी के किसी भी अन्य ऐतिहासिक उपन्यास में नहीं है ।

7 टूटे काँटे

वर्माजी का यह उपन्यास उनके अन्य ऐतिहासिक उपन्यासों के साँचे से सर्वथा भिन्न है । जहाँ उन्होंने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में सामंतीय चरित्रों को आधार बनाया हैं, वहाँ इसमें एक साधारण जाट किसान सैनिक के जीवन को लेकर जनसाधारण की आर्थिक स्थिति, जन-संस्कृति का उतार-चढ़ाव और जनमन की प्रगति का विवेचन-विश्लेषण किया है । उपन्यास की मूल कथा मोहनलाल और नूरबाई की प्रेमकथा है । वर्माजी ने इस उपन्यास में सामान्य जनता के शौर्य को शक्तिमत्ता के साथ चित्रित किया है और नैतिकता की आवाज बुलन्द की है ।

8 मृगनयनी

'मृगनयनी' 'झाँसी की रानी' के पश्चात् ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रृंखला में दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं । जिसमें तोमरवंशीय शासक राजा मानसिंह से संबंधित कथा का निरूपण हुआ है । इसमें भी मृगनयनी के व्यक्ति एवं मानसिंह के साथ उसके सफल दाम्पत्य का आह्लादक वर्णन किया गया है । मृगनयनी की मूल कथा मानसिंह और मृगनयनी से संबंधित है । हिंदी उपन्यास साहित्य में यह बहुचर्चित उपन्यास है ।'

9 भुवन विक्रम

यह वर्माजी का नवीनतम उपन्यास है, जिसमें उत्तर-वैदिक काल की कथावस्तु, कल्पना और ऐतिहासिक अन्वेषण का रंगीन और जीवन्त चित्र उपस्थित किया गया है । उपन्यास की मूल कथा राजा रोमक और भुवनविक्रम के चरित्र से संबद्ध है । शेष कथाएँ मेघ, नील और दीर्घबाहु की षडयंत्र कथा तथा नैमिषारण्य के धौम्य ऋषि की कथा से अनुस्यूत है । इस उपन्यास के विषय में लेखक ने स्वयं कहा है – "इस विषय के अंग पर मैंने 'ललितविक्रम' उपन्यास में उससे कहीं अधिक चरित्र और घटनाएँ इत्यादि हैं।"[12]

10 अहल्याबाई

'अहल्याबाई' चरित्र प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास है । तत्कालीन युग की जनता ने उन्हें देवी पद पर आसीन कर दिया था । उनके चरित्र के मानवीय गुणों को प्रकाशित करने में ही उपन्यास का समस्त रचनाविधान क्रियारत है । इस उपन्यास की कथा आदि से अंत तक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है ।

11 **देवगढ़ की मुस्कान**

'देवगढ़ की मुस्कान' ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसका कथानक ग्यारहवीं शताब्दी से संबद्ध है । यह एक चरित्रप्रधान उपन्यास है । इसमें वर्माजी ने राजा विजयपाल देव की उदारता, शौर्य, वीरता, त्याग भावना आदि का सुंदर वर्णन किया है ।

12 **रामगढ़ की रानी**

'रामगढ़ की रानी' एक लघु ऐतिहासिक उपन्यास है । उपन्यास के कथन के कथानक में स्पष्टतः दो सूत्र हैं – अंग्रेजों के दमनकारी, आतंकवादी नीति का चित्रण और दूसरा उसके विरोध में भारतीयों की क्रांतियोजना । उपन्यास की मूल कथा रामगढ़ की रानी, अवंतीबाई के चरित्र से संबद्ध है ।

13 **महारानी दुर्गावती**

'महारानी दुर्गावती' वर्माजी के 'अहल्याबाई' उपन्यास की भाँति विशुद्ध चरित्र प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यास की मूल कथा महारानी दुर्गावती के जीवन से संबद्ध है । मूल कथा दो भागों में विभाजित है – पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । पूर्वाद्ध में रानी दुर्गावती और दलपति शाह के प्रणयप्रसंग से लेकर विवाह-प्रसंग तक की कथा है । उत्तरार्द्ध की कथा दलपति शाह की मृत्यु के पश्चात् रानी दुर्गावती के जीवन-पर्यंत तक आबद्ध है । इसमें कल्पना की अपेक्षा ऐतिहासिक तथ्यों पर विशेष बल दिया गया है ।

वर्माजी ने अपने इन ऐतिहासिक उपन्यासों में किंवदंतियों और परंपराओं का जी भरकर उपयोग किया है । उनके इन उपन्यासों में ज्यादातर स्वराज्य, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता, अंग्रेजों के प्रति विरोध, मुगलशासन की स्थिति आदि बातों को लेकर रचना की है । उन्होंने इन उपन्यासों में इतिहास के साथ कल्पना का भी सहारा लिया है ।

- **सामाजिक उपन्यास**

1 लगन

'लगन' वर्माजी का 115 पृष्ठों का सामाजिक लघु उपन्यास सामाजिक अस्तव्यस्तता, क्षोभ और वेदना का समुचित चित्रण है तथा उसके विस्तार का कलात्मक परंतु व्यावहारिक समाधान उपस्थित किया गया है । इस उपन्यास को पढ़कर प्रेमचंद ने लिखा था ''इट इज़ नॉट ए नावेल बट पैस्टोरल पोएट्री''[13]

2 **संगम**

इस उपन्यास में सामाजिक क्षेत्र के कथानक का चयन किया गया है । इसमें जीवन का यथार्थ मुखरित है, साथ ही रोचकता भी पर्याप्त है । उपन्यास पूर्णरूपेण घटना प्रधान है । कथा का अधिकांश भाग मुकदमे बाजी से संबंधित है । मुकदमेबाजी से संबंधित सारी बातें या तथ्य की उपस्थिति की गई है ।

3 **प्रत्यागत**

यह एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें व्यक्ति, समाज तथा रूढ़िग्रस्त वातावरण का संघर्ष मार्मिकता एवं सत्यता से व्यंजित है । इसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता का संदेश है। बांदा के ब्राह्मण पंडित टीकाराम कर्मकांडी और उनके नये-जमाने के पुत्र मंगलदास के विचारों का पीढ़ियों का संघर्ष भी है ।

4 **कुण्डली चक्र**

'कुण्डलीचक्र' एक आदर्शवादी सामाजिक उपन्यास है । इसमें अमीर और गरीब का वर्ग संघर्ष शुरू होता है और वर्माजी की दृष्टि समाज के पीछे आर्थिक तत्वों की ओर मुड़ती है । खेतिहर किसान के पारस्परिक संबंधों पर इसकी कथा का निर्माण हुआ है । इस कथा में भी एक रोमांस है परंतु इस रोमांस की विशेषता यह है कि इसमें हृदय को छूने की शक्ति है ।

5 **प्रेम की भेंट**

यह प्रेमपरक पारिवारिक, मार्मिक उपन्यास है, परंतु इतना रहस्यपूर्ण और जिज्ञासायुक्त है कि पाठकों को अंत में ज्ञात होता हैं कि कौन किससे प्रेम करता है और स्वाभाविक रूप से । उच्च कोटि के प्रेम का आदर्श इसमें है । धीरज द्वारा औपन्यासिक प्रेम की निन्दा कराकर वर्माजी ने त्यागमय उज्जवल प्रेम के आदर्श की ओर अपनी अभिरुचि दिखाई है ।

6 कभी-न-कभी

प्रस्तुत उपन्यास में वर्माजी की दृष्टि मेहनतकशों के जीवन की ओर गई है । यह एक आकर्षण है । इस उपन्यास का विषय है, मजदूरों का ठेकेदारों से संघर्ष । मेहनतकशों के जीवन के इसी मधुर पक्ष का चित्रण वर्माजी ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है । घटना का आधार सत्य है ।

7 अचल मेरा कोई

प्रस्तुत उपन्यास को यदि हम समस्या प्रधान कहें तो अधिक उपयुक्त होगा ! वर्तमान युग की ज्वलंत समस्या जो आज के पाश्चात्य से प्रभावित स्त्री पुरूषों के पारस्परिक जीवन से संबद्ध है, इस उपन्यास में उभारी गई है और लेखक ने उसके समाधान की ओर भी इंगित किया है । वर्माजी ने इस उपन्यास में शिक्षित वर्ग के स्त्री-पुरुष संबंध और उसके विषय में मानसिकता की समस्या उठाई है ।

8 सोना

'सोना' उपन्यास का आधार है बुन्देलखण्ड की लोक कथा । इसमें एक ओर राजाओं की मूर्खता और कामुकता का चित्र है, तो दूसरी ओर गाँव के भोले-भाले किसानों और श्रमिकों की प्रतिष्ठा का । इस उपन्यास में लेखक ने सोना और रूपा के अलग-अलग स्वभाव से हमारे जीवन की बड़ी सच्चाई को हमारे सामने प्रस्तुत किया है । रूपा के चरित्र के माध्यम से लेखक ने यह सिद्ध करना चाहा है - "फूलों की सेज और श्रम का संग कभी नहीं हो सकता और न होगा और यदि कभी हुआ तो काँच की गुड़ियों के सिवा कुछ गले नहीं रहने का ।"[14] उपन्यास द्वारा लेखक कहना चाहता है कि - ".....मेहनत, सफाई और कला की उपासना से ही सच्चे जीवन का बड़प्पन मिलता है.....।"[15]

9 अमरबेल

वर्माजी के सामाजिक उपन्यासों में सबसे बड़ा है । वर्माजी ने इसके परिचय में लिखा है - "अनीति से रूपया कमाने की धुन गाँवों तक में व्यापक रूप से फैली हुई है । साहूकारी, खेती-किसानी सब में । समाज में यह घुन की तरह लगी हुई है । जैसे हरे-भरे पेड़ पर 'अमरबेल' ।"[16] इन शब्दों में वर्माजी ने 'अमरबेल' के प्रतिपाद्य की ओर संकेत किया है । उपन्यास में निश्चय ही समाज का अनीति से शोषण करने वाले और बिना श्रम किये मौज उड़ाने वाले की घृणित मनोवृत्ति का भांडाफोड़ किया गया है ।

प्रस्तुत उपन्यास वर्माजी द्वारा रचित सामाजिक उपन्यास है । जैसे पहले कहा जा चुका है, उन्होंने अतीत एवं वर्तमान दोनों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है । उनकी अतीत प्रियता के उदाहरण उनके ऐतिहासिक उपन्यास हैं और वर्तमान के प्रति मोह को उनके सामाजिक उपन्यास चरितार्थ करते हैं । वर्माजी अपने सामाजिक उपन्यासों में आज की अनेक समस्याओं को लेकर चले हैं और उन समस्याओं का समाधान तक प्रस्तुत किया है ।

3.2.2 नाटक

अब वर्माजी के नाटकों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे । वर्माजी ने दो प्रकार के नाटकों की रचना की - ऐतिहासिक और सामाजिक ।

- **ऐतिहासिक नाटक**

1 **झाँसी की रानी**

'झाँसी की रानी' वर्माजी का पहला ऐतिहासिक नाटक है । जो कहानी 'झाँसी की रानी' उपन्यास में पाँच सौ पृष्टों में वर्णित की गई थी, उसी को सवा सौ पृष्ठों के इस नाटक में लेखक ने समेटा है । पाँच अंकों में यह नाटक विभाजित है । इस नाटक में लक्ष्मीबाई का चरित्र उसकी देशभक्ति, वीरता, युद्ध-निपुणता, उदारता, साहस, शक्ति आदि का ज्वलन्त उदाहरण है ।

2 **हंस मयूर**

इस नाटक का आधार 'प्रमादक चरित्र' नामक जैन ग्रंथ है । यह नाटक का उद्देश्य शकों की क्रूरता और भारतीयों में व्याप्त संप्रदायवाद के घृणित रूप का दिग्दर्शन करना तथा स्वाधीनता और उसकी रक्षार्थ कल्याणकारी मार्ग बताना है ।

3 पूर्व की ओर

इस नाटक की रचना वर्माजी ने यह दिखलाने के लिए की है कि भारतीयों ने ईसा की तीसरी शताब्दी और उससे पूर्व के काल में भारत के पूर्व के द्वीपों में किस प्रकार भारतीय संस्कृति के तत्वों का प्रचार किया । बौद्धों ने किन-किन संकटों के बीच नग्न और पशु-जीवन बिताने वालों को सभ्य मनुष्य बनाया इसका भी आभास दिया है ।

4 फूलों की बोली

'फूलों की बोली' नाटक स्वर्ण-रसायन द्वारा स्वर्ग प्राप्त करनेवालों की मूर्खता पर व्यंग्य है । अलबरूनी की 'किताबुलमुल्क' से इसकी प्रेरणा ली है । उज्जैन के व्याहि को लेकर यह तीन अंकों का नाटक है । स्वर्ण-रसायन की व्यर्थता सिद्ध करना और श्रम द्वारा धनोपार्जन करना-नाटक का उद्देश्य है ।

5 जहाँदार शाह

यह वर्माजी का ऐतिहासिक नाटक है । वास्तव में इसका आधार एकांकी जैसा है । लेकिन एकांकी के लिए देश-काल की एकता अनिवार्य होने से इसे ऐतिहासिक नाटक के रूप में लिखा गया है । जैसे किसी व्यक्ति के जीवन के 'स्नेप शॉट्स' लेकर कोई फोटोग्राफर उसके जीवन की रूपरेखा बता देता है ऐसे ही वर्माजी ने इस नाटक द्वारा जहाँदारशाह के असली जीवन की झलक दी है।

6 **बीरबल**

इस नाटक में लेखक ने अकबर के उदार रूप को बड़ी सुंदर से स्पष्ट किया है । साथ ही उसकी विलास-वृत्ति और चंचल मन की स्थिति का भी दिग्दर्शन कराया है । बीरबल को लोग केवल एक चुटकुले बाज या दरबारी मसखरा मानते हैं । इस बात का खंडन इसमें बीरबल को अकबर का चतुर सलाहकार बताकर किया गया है ।

7 **ललित विक्रम**

'ललित विक्रम' नाटक वर्माजी के 'भुवन विक्रम' उपन्यास की कथा पर ही है । दीर्घबाहु को लेकर यह नाटक लिखा गया है । इस नाटक का उद्देश्य वही है, जो 'भुवन विक्रम' का है - ''विवेक के साथ प्राचीन को जानो और समझो, वर्तमान को देखो और उसमें विचरण करो और भविष्य की आशा को प्रबल करो ।''[17]

- **सामाजिक नाटक**

1 **धीरे-धीरे**

यह वर्माजी का पहला सामाजिक नाटक है, जो कांग्रेस सरकार के सन् 1937 के मंत्रिमंडल के समय की राजनीतिक स्थिति से संबंध रखता है । हमने इसे जान-बूझकर सामाजिक नाटकों के साथ रखा है । कारण, राजनीति और समाज को अलग नहीं किया जा सकता । दूसरी बात यह है कि इस नाटक में अप्रत्यक्ष रूप से समाज की स्थिति पर प्रकाश भी पड़ता है ।

2 **राखी की लाज**

इस नाटक में राखी की सुंदर प्रथा को हिन्दू-समाज में बनाए रखने की भावना है। यह एक स्त्री-पुरुष, समस्या प्रधान नाटक है । सोमेश्वर और चाँद खाँ समाज-सेवकों के आदर्श हैं । 'राखी का त्योहार' लोक-संस्कृति का आवश्यक अंग होने से इसमें गीतों का स्थान लोकगीतों ने विशेष रूप से लिया है, यह इसकी एक और विशेषता है ।

3 **बाँस की फाँस**

यह दो अंकों का नाटक है । इस नाटक में कॉलेज के लड़कों की छिछली प्रेम भावना पर व्यंग्य है । भिखारिनों के प्रति सिपाही से लेकर हर छोटे-बड़े की मनोवृत्ति कितनी भद्दी होती है, यह इसमें भली प्रकार दिखाया गया है । वर्माजी का यह नाटक है तो छोटा, पर बड़ा ही कलापूर्ण और रोचक है ।

4 **पीले हाथ**

इस नाटक में ढोंगी सुधारक और प्रगतिशील बनाने वालों का पर्दाफाश किया गया है। इस नाटक में गयाप्रसाद बेटे वाला है और वंशीलाल बेटी वाला । इस छोटे से नाटक में वर्माजी ने स्त्रियों की परतंत्रता के मूल कारण पर सुंदर ढंग से प्रकाश डाला है ।

5 **सगुन**

यह एक चोर बाजार से संबद्ध नाटक है । इस नाटक का पात्र कुबेरदास एक बड़ा पूँजीपति है । वह चाहता है कि बड़ी से बड़ी कंपनियों का मालिक हो जाय और सारा धन उसके पास रहे । इसके लिए वह अपने रिश्तेदारों को ही नौकरी रखता है । एक फिल्म तारिका गजरा बी.ए. से शादी करके 50 लाख की सम्पत्ति उसके नाम लिख देता है, ताकि व्यक्तिगत संपत्ति के रूप में इतने पर इन्कम टैक्स न देना पड़े । इस नाटक को राजनीतिक तथा समस्या प्रधान नाटक भी कह सकते हैं ।

6 **नीलकंठ**

इस नाटक में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों के समन्वय पर बल दिया गया है । नाटक के अनुसार वर्माजी का जीवन दर्शन है – "समाज के हलाहल को पीते रहो, उसे पेट में न पहुँचकर गले में रखे-दूसरों के दृष्टिकोण

को समझते रहने की कोशिश करते रहो, निःस्वार्थ पर सेवा करो । वैज्ञानिकों की तटस्थता और त्यागियों के अहंकार से दूर बने रहो ।"[18]

7 केवट

यह राजनीतिक दलबन्दी के दुष्परिणामों पर प्रकाश डालता है । इस नाटक में स्वप्नावस्था में विचरण 'सोम्नेम्व्यूलिज्म' और स्मृति लुप्त होने की समस्या से कौतूहल उत्पन्न किया गया है, जो मनोवैज्ञानिकों के काम की वस्तु है ।

8 मंगल सूत्र

'मंगल सूत्र' नाटक में पढ़ी-लिखी लड़की के अनमेल विवाह की समस्या है । इस नाटक में वर्माजी ने एक मनोविज्ञान के तथ्य को रखकर यह हल प्रस्तुत किया है कि यदि अशक्त पति अपनी पत्नी के योग्य न हो तो वह किसी भी अन्य समर्थ व्यक्ति से विवाह कर ले, जैसा अलका ने गोपीनाथ से किया । साथ ही यह भी बताया है कि अब स्त्री को प्राचीन परंपरा की दुहाई देकर दबाया नहीं जा सकता ।

9 खिलौने की खोज

यह नाटक और भी गहरे मनोवैज्ञानिक संघर्ष को लेकर चला है । इसमें दो डॉक्टरों की कहानी है । इस नाटक में मनोबल को सक्षम बनाकर सामाजिक प्रश्नों का हल खोजने का उद्देश्य है ।

10 निस्तार

'निस्तार' नाटक का संबंध हरिजनों की समस्या से है । नाटक की रचना का कारण वर्माजी ने यों दिया है - "अछूत अपनी ईमानदारी और शूरवीरी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं । ऐसे भी लोग पिछड़े बने रहें - उनकी पूजा केवल धन राशि बटोरने के लिए की जाय - यह हमारे समाज के लिए महाकलंक की बात है ।"[19] इसमें मुख्य रूप से दो समस्याओं को उठाया गया है – एक तो कुओं के पानी भरने की और दूसरी मंदिर प्रवेश की ।

11 देखा-देखी

इस नाटक में सामाजिक उत्सवों में केवल दिखावे के लिए अपव्यय करने पर प्रहार है । वर्माजी ने अपने इस नाटक में हरनारायण नामक पात्र द्वारा दूसरों की देखा-देखी अपनी सीमा से अधिक खर्च करने का मजाक उड़वाया है ।

3.2.3 कहानियाँ

वर्माजी के अब तक सात कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं ।

1. कलाकार का दण्ड
2. शरणागत
3. तोषी
4. अंबरपुर के अमरवीर
5. ऐतिहासिक कहानियाँ
6. मेंढ़की का ब्याह
7. अंगूठी का दान

इसमें से एक 'तोषी' अन्य संग्रहों में छपी कहानियों का ही एक संकलित पुनर्मुद्रण मात्र है । 'तोषी' संग्रह को हटाकर वर्माजी के छः कहानी – संग्रह बनते हैं । इसमें सब मिलाकर वर्माजी ने 15 कहानियाँ लिखीं । इन कहानियों का विषयानुसार वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है –

1. ऐतिहासिक कहानियाँ
2. राजनीतिक कहानियाँ
3. सामाजिक कहानियाँ
4. हास्य-व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ
5. संकेतात्मक कहानियाँ

1 ऐतिहासिक कहानियाँ

ऐतिहासिक कहानियों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक चले आनेवाले इतिहास को लिया गया है । इसमें अलग शासकों से संबंधित कहानियाँ हैं, जो इस प्रकार है ।

- **मुगलों से संबंधित कहानियाँ**

इसमें 'जैनावादी बेगम', 'नैतिक स्तर', 'गवैते की सूबेदारी', 'इब्राहीम खाँ गादी', 'मुहम्मद शाह का न्याय', 'शेरशाह का न्याय', 'टूटी सुराही', 'फीरोज शाह तुगलक की सहानुभूति', 'जहाँगीर की सनक', 'वेतन की वसूली', 'गेहूँ के साथ भूसा', 'उस प्रेम का पुरस्कार', 'अलीवर्दी खाँ की वसीयत', 'लुटेरे का विवेक' आदि ।

- **राजपूतों से संबंधित कहानियाँ**

इन कहानियों के दो भेद कर सकते हैं – एक गुजरात के राजपूतों की कहानियाँ । गुजरात के राजपूतों की कहानियों में 'युद्ध बचाया' और 'सिद्धराज जयसिंह का न्याय' महत्वपूर्ण है । जबकि दूसरी राजस्थान के राजपूतों की कहानियों में 'पहले कौन' और 'खजाना किसका' दो कहानियाँ बड़ी सुन्दर हैं ।

- **मराठों, बुन्देलों और सिक्खों से संबंधित कहानियाँ**

इसमें मराठा जीवन से संबंधित कहानियों में - 'अष्णाजी पन्त', 'रामशास्त्री की निस्पृहता', 'महज एक मामूली सवार' और 'सत्ताधारी का तमाचा'

उल्लेखनीय कहानियाँ हैं । जबकि, बुन्देलखण्ड से संबंधित कहानियों में 'मेढ़की का ब्याह' और 'मुँह न दिखलाना' आदि बुन्देलखण्ड के इतिहास से संबंधित सुंदर कहानियाँ हैं । सिक्खों से संबंधित कहानी एक ही है 'रिहाई तलवार की धार पर ।'

- **विदेशियों से संबंधित कहानियाँ**

इसमें 'मेरा अपराध' और '13 तारीख और शुक्रवार का दिन' कहानी मुख्य है ।

2 **राजनीतिक कहानियाँ**

राजनीतिक कहानियों में कुछ कहानियाँ तो सन् 1857 की क्रांति की हैं और कुछ सन् 1947 की । जो इस प्रकार हैं - 'अम्बरपुर के अमरवीर', 'कायदे की बात', 'देशद्रोही का मुँह काला', 'बदले के साथ इंग्लैंड का भला', 'ऋण साफ और ईमान नहीं टूटा', 'नान साहब और कानपुर की वह दुर्घटना', 'इतना सब कहाँ विद्रोह', 'दयावान था ?' 'अभी तो मैं जीवित हूँ' और 'दिल्ली के पतन का एक कारण यह भी हुआ' प्रमुख कहानी है ।

3 **सामाजिक कहानियाँ**

वर्माजी की सामाजिक कहानियों में कुछ समस्या को लेकर, कुछ सरकारी अफसरों से और कुछ श्रमदान या सहकारी आंदोलन से संबंधित हैं, जो इस

प्रकार हैं - 'शरणागत', 'तिरंगे वाली स्त्री', 'उन फूलों को कुचला', 'बेटी का स्नेह', 'बम फटना', 'थानेदार की तलाशी', 'धरती माता तोको सुमिरौ' प्रमुख हैं।

4 हास्य – व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ

हास्य व्यंग्यपूर्ण कहानियों में 'झकोला चारपाई', 'मूंग की दाल', 'यही धन्धा मैं भी करता हूँ', 'नये रंग ढंग', 'चोर बाजार की गंगोत्री' तथा 'सरकारी कलम-दवात नहीं मिलेंगी', 'कागज का हीरा', 'हार या प्रहार', 'पत्नी पूजन-यज्ञ', 'अपनी बीती' उल्लेखनीय कहानियाँ मानी जाती हैं ।

5 संकेतात्मक कहानियाँ

इन कहानियों में हम भावात्मक, प्रतीकात्मक अथवा ऐसी कहानियों को ले सकते हैं, जो किसी गहन मानवीय तत्व की भी व्यंजना करती हैं । 'कलाकार का दंड', 'खजुराहों की दो मूर्तियाँ', 'इन्द्र का अचूक हथियार' और 'सौन्दर्य प्रतियोगिता' ऐसी ही कहानियाँ हैं ।

3.2.4 एकांकी

वर्माजी ने तीन प्रकार की एकांकी लिखें । इन तीनों एकांकियों का परिचय निम्नलिखित है ।

1 कश्मीर का कांटा

यह वर्माजी का पहला ऐतिहासिक एकांकी है, जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट है । यह एकांकी सन् 1947 में पाकिस्तानी कबीलाओं ने जो कश्मीर पर आक्रमण किया था, उसका मुँहतोड़ जवाब हिन्दू-मुस्लिम दोनों ने मिलकर कैसे दिया, उसका वर्णन है । नाटकों के परिचय में वर्माजी ने कहा है - ''संपूर्ण निस्सहायता की परिस्थिति में भी इन स्त्री-पुरुषों ने जो जौहर दिखलाया वह सूरमाओं के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य हैं । वह वीरता अनुपम थी । कश्मीर क्या, भारत-भर उन वीरों का चिर कृतज्ञ रहेगा ।''[20]

2 **कनेर**

'कनेर' एकांकी में तीन एकांकी हैं - 'कनेर', 'टंटागुरू' और 'शासन का डण्डा' । 'कनेर' में पूर्व और पश्चिम के अध्यात्म और विज्ञान संबंधी बहस का वर्णन है । 'टटागुरू' में जल्दी से अमीर होना चाहनेवालों पर करारा व्यंग्य है । 'शासन का डण्डा' में एक जागीरदार को चमार कैसे सही राह पर लाता है उसकी कहानी है ।

3 **लो भाई पंचों ! लो !**

यह गाँव की दरिद्र जनता पर पंचायत द्वारा होनेवाला अन्याय अत्याचार पर आधारित एकांकी है । हाथ में अंगारा रखना, जलते चूल्हे और उबलते । तेल की कड़ाही में हाथ डालने जैसी परीक्षाएँ कितनी बर्बर थीं इसका मुँहतोड़ जवाब

छंदी नामक पात्र द्वारा दिलाया है । कभी-कभी बुरे आदमी के भीतर भी कितनी अच्छाई छिपी रहती है, यह इस एकांकी का उद्देश्य है ।

3.2.5 आत्मकथा

1 अपनी कहानी

यह वर्माजी की आत्मकथा है, जिसमें 394 पृष्ठ हैं । 394 पृष्ठों की 'अपनी कहानी' आत्मकथा में वर्माजी ने अपने व्यक्तित्व के बारे में एवं कहीं-कहीं बुन्देलखण्ड की मिट्टी और नदियों, शिकारी अनुभवों आदि के प्रति अपनी स्मृतियाँ संकलित की हैं । यह उनकी अंतिम पुस्तक रही ।

2 दबे पाँव

जहाँ तक 'दबे पाँव' का संबंध है, यह उनकी अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है। इससे वर्माजी के शिकारी रूप पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है । वर्माजी ने कैसे शिकार खेलना प्रारंभ किया, कौन-कौन मित्र उनके साथ रहे, किस-किस जानवर के शिकार में क्या-क्या अनुभव हुए – आदि बातों का बड़ा ही सुंदर वर्णन है ।

3.2.6 स्फुट (लोकगीत)

1 बुन्देलखण्ड के लोकगीत

इस लोकगीत में बुन्देलखण्ड के लोक-गीतों की सरस व्याख्या प्रस्तुत की गई है जो उनकी लोक-संस्कृति के प्रति तीव्र अनुरक्ति की सूचक है ।

3.2.7 गद्य-काव्य

वर्माजी ने गद्य-काव्य की सिर्फ एक किताब लिखी 'हृदय की हिलोर' । यह उनकी बिलकुल प्रथम कृति थी । ये गद्य-काव्य आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'अन्तन्यता', 'दर्शन-लालसा', 'अनुनय-विनय', 'रीझ-बुझ' और कसक-वेदना के बहुरंगे चित्र हैं । इनके शीर्षक हैं - 'तुमको मैंने आज देखा', 'तुम मेरे प्राणधन हो', 'कसक', 'उपहार', 'उदासीन' आदि ।

3.2.8 अप्रकाशित रचना

इन रचनाओं के अतिरिक्त वर्माजी 'अमर ज्योति', 'ललितादित्य', 'कब तक', 'उदय किरण' आदि पुस्तकों की रचना की, जो अप्रकाशित है ।

3.2.9 पुरस्कार

1. भारत सरकार का पहला पुरस्कार – सन् 1954 में 2000 रूपये ।
2. साहित्यकार – संसद – पुरस्कार – 1000 रूपये
3. उत्तर प्रदेश राज्य पुरस्कार – 1000 रूपये
4. मध्य भारत राज्य पुरस्कार – 1000 रूपये

5. नेहरू पुरस्कार – 8000 रूपये

6. हिन्दुस्तानी एकेडेमी पुरस्कार – 500 रूपये

7. नागरी प्रचारिणी पुरस्कार – 250 रुपये ।

जब वर्माजी भारतीय सांस्कृतिक के प्रतिनिधि के रूप में रूस गये थे तब 1968 में रूसी सरकार ने उन्हें 'सोवियत नेहरू' पुरस्कार से सम्मानित किया था।

वृन्दावनलाल वर्माजी ने अनेक कृतियों की रचना की है । वर्माजी का स्थान हिंदी साहित्य जगत में सदा आदर, सम्मान के साथ लिया जाता है । कभी-कभी तो वे आठ-आठ, दस-दस घंटे बराबर लिखते रहते हैं । यही कारण है कि वह हिंदी-संसार को इतनी बहुमूल्य कृतियों से समृद्ध कर सके । वर्माजी ने स्वयं लिखा है - ''अच्छे से अच्छा लिखता चला जाऊँ, बस यही धुन है।''[21]

उपन्यास, नाटक और कहानी तीनों क्षेत्रों में उनकी कृतियाँ महत्वपूर्ण हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ रूप ऐतिहासिक उपन्यासों में ही दिखाई देता है । इसके बारे में पंडित गोविन्दवल्लभ पंत ने कहा है - ''वृन्दावनलाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान है ।''[22]

इनकी साहित्यिक सफलताओं को देखके डॉ. बाबूराम सक्सेना ने तो यहाँ तक कहा है - ''हिंदी साहित्यकारों में वर्माजी का स्थान बहुत ऊँचा है ।

उपन्यासकार तो उनकी तुलना का कोई है ही नहीं । निश्चय ही अपने ऐतिहासिक क्षेत्र में वह अपना अद्वितीय स्थान रखते हैं.....''[23]

डॉ. प्रभाकर माचवे ने कहा है –

''साहित्य के इतिहास में संस्मरणीय ऐतिहासिक उपन्यास - लेखक केवल चार-पाँच ही हैं, राहुल सांकृत्यायन, भगवत शरण उपाध्याय (जिनकी उपन्यास से अधिक बड़ी कहानियाँ हैं ।) हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, रांगेय राघव, चतुरसेन शास्त्री और इन सब में गुण और परिणाम दोनों दृष्टियों से सर्वाधिक और अच्छा लिखने वाले श्री वृन्दावनलाल वर्मा .....''[24]

डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने कहा है –

''मैं 'गढ़ कुण्डार', 'विराटा की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' आदि औपन्यासिक कृतियों के आधार पर हिंदी में वृन्दावनलाल वर्मा ही को एक उल्लेखनीय ऐतिहासिक उपन्यास लेखक मानता हूँ ।'' [25]

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है –

''वर्माजी हिंदी के श्रेष्ठ मौलिक लेखक हैं ।'' [26]

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, सियारामशरण, 'वृन्दावनलाल वर्मा' : साहित्य और समीक्षा. पृ.204

2. वर्माजी, वृन्दावनलाल – अपनी कहानी, पृ.14

3. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह 'कमलेश' –वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ.4

4. वहीं, पृ.7,8

5. प्रसाद, सियारामशरण - 'वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा', पृ. 33

6. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह 'कमलेश' –वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ.10

7. प्रसाद, सियारामशरण – वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा, पृ.34

8. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह, 'कमलेश' –वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ.12-13

9. वर्माजी, वृन्दावनलाल – अपनी कहानी, पृ.142

10. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह 'कमलेश' – वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ.14

11. तिवारी, डॉ. रामप्यारे – वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का पुनर्मूल्यांकन से उद्धृत, पृ.17

12. वर्मा, वृन्दावनलाल – भुवन विक्रम, पृ.10

13. प्रसाद, सियारामशरण – वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा, पृ.44

14. वर्मा, वृन्दावनलाल – सोना (सामाजिक उपन्यास), पृ.247

15. प्रसाद, सियारामशरण – वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा, पृ. 77

16. वर्मा, वृन्दावनलालः अमरबेल (सामाजिक उपन्यास), परिचय पृष्ठ

17. वर्मा, वृन्दावनलालः ललित विक्रम (ऐतिहासिक नाटक), पृ.127

18. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह 'कमलेश' – वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व से उद्धृत, पृ.203

19. वही, पृ. 181

20. वर्मा वृन्दावनलालः कश्मीर का कांटा (एकांकी), परिचय पृष्ठ

21. शर्मा, डॉ. पद्मसिंह 'कमलेश' – वृन्दावनलाल वर्माः व्यक्तित्व और कृतित्व से उद्धृत, पृ.252

22. डॉ. प्रभाकर माचवे - 'वृन्दावनलाल वर्मा', पृ.29

23. प्रसाद, सियारामशरण – वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा, पृ. 21

24. अवस्थी, डॉ. कृष्णा – वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन से उद्धृत, पृ.354

25. अवस्थी, डॉ. कृष्णा, वही, पृ.354

26. प्रसाद, सियारामशरण – वृन्दावनलाल वर्माः साहित्य और समीक्षा, पृ.21